मौत को गले लगाना सीखें

-युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर 15 फरवरी 09-

जो मुक्त होने का इच्छुक होता है, वह मुमुक्षु कहलाता है। आदमी अमर की तरह आचरण नहीं करके मुमुक्षु की तरह आचरण करे। मनुष्य जीवन दुर्लभ है। साथ ही महापुषों का सान्निध्य मिलना भी कठिन है। उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ के उ□ाराधिकारी युवाचार्य महाश्रमण ने स्थानीय श्रीमद् मघवा समवसरण में दैनिक प्रवचन के दौरान धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा-कई लोग ऐसे होते हैं जो मौत की परवाह किए बिना अपना काम करते हैं ताकि मरणोपरान्त दुनियां उन्हें याद करे। मरना बड़ा कठिन लगता है। मौत को भी प्यार करो ताकी मरने का डर नहीं रहे। कुछ आत्माएं ऐसी होती है, जिन्हें अपनी मौत याद रहती है वे लोग अपने जीवन में हमेशा पाप कर्म से बचते हैं। हमेशा यह सोच रहनी चाहिए कि एक दिन मरना तो है ही साथ में धर्म की पोटली लेकर जाऊं ताकि अग्रिम गति भी अच्छी हो सके।

उन्होंने आगे बताया कि व्यक्ति का दृष्टिकोण अच्छा होना चाहिए। किसी भी कार्य के लिए तीन बातें आवश्यक है-भावना, कार्य और परिणाम। जब आदमी की भावना शुद्ध होगी तो काम भी अच्छा होगा और काम अच्छा होगा तो उसका परिणाम भी अच्छा आएगा। परिणाम का सीधा सम्बन्ध दृष्टिकोण से है। भावना में अन्तर आने से परिणाम में भी अन्तर आ जाता है। जिसने शुद्ध भावना का अभ्यास करना सीख लिया मानो उसने मौत का अभ्यास कर लिया।

मुनि सुरेशकुमार ने किया विहार

आचार्य महाप्रज्ञ के शिष्य मुनि सुरेशकुमार''हरनावां'' अपने सहयोगी संत के साथ आचार्य महाप्रज्ञ से आशीर्वाद प्राप्त कर रविवार को राजनगर-मेवाड़ की तरफ विहार किया।